औळाती की रात

८-११०

मालीराम शर्मा

सूर्य प्रकाशन मन्दिर
बीकानेर

अपनी तरफ से

• जो कुछ देखा—स्थूल सूक्ष्म—उसके ये कुछ बिम्ब हैं, ईमानदारी के साथ। इन बिम्बों को उभारने में जो शब्द सहज भाव से आ गये, उन्हें जगह दे दी—बिना किसी भेद-भाव के, छुआछूत के! इनके पीछे न कोई आग्रह है न आस्था। हाँ, एक बात और है। कानों ने जहाँ कहीं पर जोर देकर कहा, उनकी बात अनसुनी नहीं की गई।

अन्त में मेरे दोस्त श्री जानकीप्रसाद उपाध्याय को धन्यवाद देना, अपनी ही शराफत का निर्वाह करना है। सचमुच, उन्होंने मुझसे व मैन्युस्क्रिप्ट से समय-समय पर बड़ी मगज-पच्ची की है।

नंद निकेतन
बीकानेर (राजस्थान)

—मालीराम शर्मा

ओबर्ज की रात

ओबर्ज की रात

(मध्य ऐशिया की पृष्ठभूमि में)

"टैक्सी, टैक्सी !"
"इश्लोनक यावह् जैन ?"[1]
"जैन, मरहबह् ।"[2]
"ओबर्ज ।"[3]
"जैन, रुबा दीनार ।"[4]
"मक खालिफ ।"[5]
"फदल"[6]
खुला दरवाजा,
दाखिल हुआ
चल दिया शेवरलेट का लेटेस्ट मॉडल
चीरता हुआ
बगदाद की रशीद स्ट्रीट
जिसके दोनों तरफ इतराता
नजर आता है
अरबी हुस्न का हुजूम ।
गोल-गोल गोरे-गोरे चेहरे
किसी खास अन्दाज में
कटे बाल
पहिने हुए काला अबाय[7]

---

१. कैसे हैं श्रीमन् ? ठीक है ?
२ ठीक, स्वागत है आपका
३. केबरा, रात्रिक्लब
४. ठीक, चौथाई दीनार (ईराकी सिक्का)
५. कोई बात नहीं, स्वीकार है
६. पधारिये
७. बुर्कनुमा चोगा

जैसे कि वकील का गाउन
काले बैकग्राउण्ड में
उभरे पड़ते थे
वे सीमेटिक फीचर।
टैक्सी चली जा रही थी
रोशनी की जगमगाहट में।
ऐसी रोशनी कि हिन्दुस्तान की दीवाली का
दिवाला पिट जाये हज़ार बार।
जश्न पर थी आस्मेतल ईराक,
जश्न पर थी अलिफ लैला की नगरी,
जश्न पर थी हारू अल रशीद की दुनियाँ,
जश्न पर था अलमामून का आलम,
मशहूर थे यहाँ के हमाम,
मशहूर थे यहाँ के हरम,
मशहूर थी यहाँ की हूर
मशहूर था यहाँ का नूर
यह शबाब की नगरी
यह शराब की नगरी
शराब बहती थी इक तरफ,
दिजला बहती थी इक तरफ।
"दावहू, देखते हो ?"
सामने है सादून स्ट्रीट
वह खड़ा निमयाल सादून का
कौन था सादून ?
छोड़ो न तवारीख को
क्यों करते हो
कल की बात
जो गुज़र गया,
जीना था जिनको
जो जिये
अपने हिसाब से,
अपने मय्यार से
सो रहे हैं
कब्र में

थक कर
सोने दो
क्यों उखाड़ते हो
मुर्दों को
कब्र से ?
छोड़ दो बात
कल की,
परसों की,
बात करो आज की,
बात करो औवर्ज की,
शहरज़ाद की, मडोना की।
मिलेंगी आर्टिस्ट
तुर्की, यूनानी, अलमानी,
रोमानी, लबनानी
बात करो उनके नक्श की,
निगाहों की,
यह लो आ गया औवर्ज,
मुबारक हो
आजकी लैल और लैला भी
फीमाला
इस दुनियां मे एक नई दुनियां
नई दुनियां के दस्तूर नये
आदाब नये, दिमाग़ नये।
आज का प्रोग्राम ?
बेले है, बेलेरिना है, सोलो है
ट्विस्ट है, रॉकन रोल है
फ्लोर शो को मिलेंगी आर्टिस्ट
दूर दूर की
तेहरान की, बेरूत की, हेम्बर्ग की
टर्क हैं, जर्मन हैं, फ्रेंच हैं
इटालियन हैं, ब्लोण्ड हैं,
ब्रुनेट हैं, नीगर हैं, पटीट हैं
बक्सम हैं, बम्पी हैं
कहिये, आपकी फरमायश ?

बोलिये, आपकी तलाश ?
हमें चाहिये ब्लोण्ड
ऐसी कि
जिसमें जान हो
हसीन हो
कमसिन हो
अकमल हो
अजमल हो
यानी मेरे कहने का मतलब
मेरे दिमाग़ में शक्ल है औरत की
एक सूरत है औरत की
एक आइडिया है औरत का
माफ़ करें, अर्ज़ है
छोड़िये बर्कले को
छोड़िये लोक को
ह्यूम को
काण्ट को
हेगल को
नित्शे को।
औरत
एक कमोडिटी है,
चीज़ है, वस्तु है
खरीद की, बिक्री की,
मिलती है
कीमत पर।
हर चीज़ की कीमत
प्राइस टैग लगा रहता है,
औरत एक आइडिया नहीं,
उसका स्थान न दिल है
न दिमाग़ है
वह रहती है
पॉकिट में,
पर्स में।
खरीद लो

दूकान से
शो-रूम से
बाज़ार से
बोली में
नीलाम में,
चीज़ की कण्डीशन होती है
फर्स्ट हैंड, सेकिण्ड हैंड
रन्डम, कटपीस,
कीमतें
घटती हैं
बढ़ती हैं
कण्डीशन के मुताबिक
डीमाण्ड के मुताबिक
सप्लाई के मुताबिक
हाँ, यह बात भी है
कभी इन्फलेशन
कभी डिफ्लेशन।
खैर, जाने दीजिये,
हाजिर करूँ
कोइ डिश
चटपटी
कोई खिलौना,
कोई साथी
कोई गुड़िया
आज की रात के लिए,
पसंद आपकी
यह नहीं तो वह
वह नहीं तो वह
पसद कीजिए
अभी बुलाये देता हूँ
अभी दिखाये देता हूँ
देखिये ज़ात से
बात से
परखिये

ग्राहक की नज़र से
खरीददार की नज़र से,
"डोली डिअर,
कम हिअर,
आप से मिलिये।"
"ह्र डू"
"डू डू
फाइन, मंजूर
तैं रहा
फुल नाइट।"
"ओके, चीरिओ
गुड लक,
गुड एडवेन्चर
लगी है मेज़ कोने में
नम्बर एटी सेवन
केबिन के पास।"
घुसते ही हॉल में,
हाल ही बदल गये,
बज रहा था कनाटा
छाया हुआ था सन्नाटा
चहक रही थी बुलबुल
कौन थी ?
पता नहीं
स्पेनिश थी कि डेनिश
तैर रही थी आवाज़
थिरक रही थी आवाज़
क्या थी वह ज़ुबान ?
क्या थी उसकी थीम ?
समझ में नहीं आ रही थी ज़ुबान
समझ में नहीं आ रही थी थीम
पर लग रहा था ऐसा
इस गीत में मैं हूँ
इस थीम में मैं हूँ।
"माई डोली, माई डार्लिंग !

अचनी हो खूब
सजनी हो खूब
दुलहिन सी,
तेरे सुनहले बाल
ये सोने के बाल
तैर रहे हैं
झूम रहे हैं
घूम रहे हैं
तेरे कन्धों पर
यह झूमता यौवन
यह पुकारता यौवन
यह ललकारता यौवन
जगा देता है
जीने की हसरत,
देखने दो, यह निओनाइट !
यह सारा समा, रंगीन छत,
बैठे हुए लोग, टूज में
ग्रीज में,
सबके पास बात एक,
थीम एक
तरीका एक
मकसद एक।"
हाँ, मैं दुलहिन
हर शाम की दुलहिन
शाम के साथ सुहाग आता
सुबह के साथ दुहाग आता
शाम के साथ प्यार आता
शाम के साथ यार आता
शाम के साथ,
प्यार में ज्वार आता
सुबह के साथ उतार आता
शाम है, जाम है
शाम है, शराब है
शाम है, शबाब है

[illegible]

शराब में बहती है जिन्दगी,
शराब में बसती है जिन्दगी,

शराब मून है जिन्दगी का
शराब पैमाना है जिन्दगी का।
"स्मोक हनी ?"
"आइ डू"
"तो जला, सिगरेट जला,
छा जाये धुआं, उभर आयें कुछ चित्र
धुएँ में।"
"जिन्दगी अपने आप में
एक स्मोकस्क्रीन है।"
छोड़ दो फलसफी,
मुझे पीनी है शराब
तेरे होंठो से
पूरी करनी है साध
जो धुक रही थी
एक अर्से से,
इस सिगरेट की तरह
कि कोई मिले ब्लोण्ड
जो हो लाख में एक,
जब से तुम्हें देखा है
खो गया हूँ मैं,
उलझ गया हूँ मैं,
तेरे बालो के
लूप्स मे
टर्न्स मे
ट्विस्ट्स मे,
यह नही कि देखी नही औरत ?
देखी है औरत
बहुत ही नजदीक से
काली आँखें, भूरी आँखें
बिल्ली जैसी, हिरणी जैसी
मछली जैसी,
पर, ये नीली आँखें
जगा देती है प्यास
न जाने किस जन्म की,

पीता रहूँ शराब
जो बरसती है इन आँखों में
क्या कहा तुमने ?
'हिन्दुस्तान की औरत',
हिन्दुस्तान में औरत नहीं
मर गई औरत
रह गई मोहरत
यह तो बण्डल है, पैकिट है
लिपटा हुआ, डपटा हुआ,
एक बन्द लिफाफा
झुकी हुई आँखें
कतरी हुई पाँखें,
न जाने किस गुनाह के कारण
उठती नहीं आँखें,
सिर से पैर तक ढकी हुई,
बीमार-सी, बेज़ार-सी
रोती है, हँसती नहीं
मुरझा जाती है खिलती नहीं
आँखों में बेबाकियाँ कहाँ ?
सीने में उभार कहाँ ?
मैंचस्टिक की औरत
मिनी में जचती नहीं,
लवली लेग्स में फबती नहीं,
वह इश्तहार है औरत का,
इज़हार नहीं,
मेरा वश चले तो नीलाम कर दूँ
बेच दूँ, एनमास
एन ब्लोक
लाऊँ एक ऐसी औरत का बीज,
एक हाईब्रिड औरत का बीज,
बिखेर दूँ, धरती पर,
फिज़ा में, हवा में
ताकि लग जाए वह पौधा
बदल जाये हिन्दुस्तान की तकदीर,

फूट पड़े एक नई तहजीब,
क्यों गड़ती है वह हरमों में ?
बन्धी पड़ी है कर्मों में,
धर्मों में,
लकीर का फकीर
पूजती रहती है
भाटे को, भूत को
चाटती रहती है रेत
इस व्यवस्था को
जो जीर्ण है
शीर्ण है
कीचड़ है।
मलती रहती है कीचड़
परम्परा का, ट्रेडीशन का
चाव से, भाव से।
मैं कहता हूँ
फेंक दे बुर्का, तोड़ दे दीवार
शर्म की
धर्म की
समाज की
नमाज की
स्टेज पर आ, सीना खोलकर,
कह दे ऐलान से
आज से आजाद हूँ,
मुक्त हूँ, उन्मुक्त हूँ
प्यार में, व्यवहार में
आहार में, आचार में
हटा लो तुम्हारे बुत,
मैं न सीता हूँ न सती हूँ
मरूँगी न जलूँगी
किसी लूले के लिये
लंगड़े के लिये
बहरे के लिये
मुफलिस के लिए,

मैं राग की बैरी नहीं,
मैं आग हूँ
पराग हूँ
राग हूँ
अनुराग हूँ
घुटूंगी नहीं, घुकूंगी नहीं,
किसी दीवार के पीछे
मैं धुआं नहीं, आग हूँ
जलूंगी, जलाऊंगी
मैं डरती नहीं,
पीर से
पैगम्बर मे
अवतार मे
जहन्नुम मे जाय तुम्हारी जन्नत,
जन्नत मेरे पास है
जन्नत मेरे सीने में है
मेरे होठों में है
मेरी आंखों में है,
पर मानती नही
वह हिन्दुस्तानी बन्द गोभी।
भाड़ में जाय
मेरी बला से,
मुझे क्या लेना है
जब तुम मेरे पास हो।
शराब ला,
उंड़ेल दे बोतल,
उंड़ेल दे तेरे होठों से
तेरी निगाहों से
बना दे कोकटेल।
ह्विस्की है जाम मे,
ह्विस्की है बोतल में,
तेरे श्वासों में ह्विस्की
माहोल में ह्विस्की
तेरे होठों में ह्विस्की

ले भी अगर चुस्की
तो चलती रही हिचकी,
जा रहा है होश
सो रहा है हवास
जाग रही है हविस,
ऐसी हविस जो मिटती नहीं
बढ़ती ही जाती है
घटती नहीं।
अब तो
उफान है, तूफान है
टीस है, चोंम है, चीख है
भूख है, हूक है
मांस में।
जाग उठी है
ये मांसल इच्छाएँ
फड़क उठी हैं
ये मांस पेशियाँ
तन रहा है मांस
खिच रहा है मांस
कड़क रहा है मांस
फड़क रहा है मांस
अकड़ रहा है मांस
बढ़ रहा है मांस
उछल रहा है मांस
आकुल है मांस
व्याकुल है मांस
रम जाये मांस में मांस
छा जाये, मांस पर मांस।
आहार है मांस का
व्यवहार है मांस का
व्यापार है मांस का
इधर मांस, उधर मांस
प्लेट में, फ्लैट में
कुर्सी पर, सोफ़े पर,

दिल में, कुछ नहीं,
दिमाग में, कुछ नहीं,
दिल रह गया एक मांस का टुकड़ा
जो धड़क रहा है
दिमाग रह गया एक मांस पिण्ड
अब तू एक पिण्ड,
अब मैं एक पिण्ड,
बीच में न रहे कोई दीवार
मलाद्रिम की न मलमल की.
देखनी हैं, मुझे तेरी वादियें
मापनी हैं गहराइयाँ
तेरी सलवटों की
तेरी करवटों की।
देर न कर
सब्र है न शऊर
क्लाइमेक्स है, इन्तहा है
मेरे इन्तजार का।
पर्दा हटा,
पर्दा गिरा
ज्ञान पर
विज्ञान पर
ध्यान पर
भगवान पर
ईमान पर
दुनिया मिट गई, सिमिट गई
समा गई, महदूद है
इस कमरे तक
बचे है जिसमें दो इन्सान
तू और मैं
हौवा और आदम,
आ, मेरे पास में आ,
मेरे पास में आ
तेरी नीली आँखों में इतराना है
एक नया आलम

आ, तेरे होंठों पर दास्तान तो छोड़ दूँ
तेरे लबों पर दस्तखत तो छोड़ दूँ
ये तेरे प्यारे-प्यारे होंठ
पतले-पतले होंठ !
तेरे होंठों से गुजरे हैं
हजारों ही लोग
छोड़ गये अपने निशान ।
यह निशान किसी काजी का है
नाजी का है
हाजी का है
पाजी का है ।
ये निशान अमिट हैं
सीमेण्ट में लिखे हैं
छूट नहीं सकते
मैन्युफैक्चरर से ।
पर मुझे उससे क्या ?
मैं राहगीर हूँ उस राह का
गुजरे जहाँ से हजारों ही लोग,
जरा नजदीक तो आ,
लड़खड़ाने लगी है जुबान
काँपने लगी हैं अँगुलियाँ
अभी तो करनी हैं
बातें बड़े काम की ।
पर, क्या कहा तुमने ?
जा रही हो, कहाँ ?
चार बज गये तो क्या हुआ ?
रात अभी बाकी है
बात अभी बाकी है
मानता हूँ
इकरार था
कॉन्ट्रैक्ट था
कॉन्ट्रैक्ट में कण्डीशन थी
टाइम की,
पर कुछ तो लिहाज कर ।
वह दर्द-आलम हो गई
लाशी है, कमरा

ऐश
सिगरेट के पैकिट
शराब की बोतलें,
प्लेटों में पड़े थे काँटे मछली के।
वह कौन थी ?
क्या थी ?
गूँज रही थी आवाज़ें
रह-रह कर।
वह एक लाशा थी
पाँच फीट छः इन्च लम्बा बेअरफुट
तैंतीस इन्च सीना
बाइस इन्च वेस्ट लाइन
बारह इन्च पिण्डलियाँ
एक सौ दो पौण्ड वज़न
खाली पेट,
वह लाशा थी।
औरत क्या है ?
शराब !
रोशनी !
आइडिया
दिमाग का !
दिमाग मरता नहीं,
आइडिया मरता नहीं,
शायद औरत मरती नहीं !
गूँज रही थी आवाज़ें।
उठा।
बाहर निकला किसी तरह
टैक्सी-टैक्सी !
होटल रोमीरामीस।
टैक्सी जा रही थी
उन्हीं राहों से
मगर
बदली हुई थी सड़कें,
बदले हुए थे नज़ारे,
बदला हुआ था बगदाद,
या बदला हुआ था मैं !

गुठली का आम

यह लो आम।
आपके लिए।
मगर यह गुठली है।
आम कहाँ ?
गुठली में आम है।
रोप दो,
इन्तजार करो
उस दिन का।
मतलब ?
मतलब साफ है
सब्र का फल मीठा होता है।

गुटुरगूँ

सुनो,
ज़रा कान लगाकर सुनो,
यहाँ गूँजती है गुटुरगूँ आज भी,
खला में,
इन खाली कमरों में
उन कबूतरों की
जिनके पंखों पर होती थी
कलाबूती पचरंगी,
चोंचों पर लिखे जाते थे
गीत
मरन मिलन के
और कुछ कसमें भी थीं कि
प्यार करेंगे
मगर पार न करेंगे
लक्ष्मण रेखा।
पर ये रसमी क़समें,
इतिहास की दुहाइयाँ
जमकर बर्फ़ हो गईं
जब बर्फ़ का रंग लाल हो गया,
जैतून की पत्तियाँ बिखर गईं
और
वह
एक रोज़ मर गया।
क्यों ?
पता नहीं।

कोई कहता है दिल दहमत खा गया था
कोई कहता है खून आ गया था
कोई कहता है मीना बुखार आ गया था
कोई कहता है शाहजहाँ के बेटों ने
बगावत कर दी।
जो कुछ भी हो,
वह मर गया
दहसत से
दिल के दौरे में
और ये उसके बचे हुए कबूतर
सकता खाये हुए,
पर कलम,
अब भी कह रहे हैं कुछ गुटुरगूँ में
गुटुरगूँ, गुटुरगूँ, गुटुरगूँ।
मगर कौन समझे इनकी गुटुरगूँ ?
मैंने तो देखा है
बिल्ली जब आती है
तो आँख बन्द कर लेते हैं,
फिर वही
गुटुरगूँ, गुटुरगूँ, गुटुरगूँ।

कंघा

ओ कंघे, अय कोम,
घूमे हो मेरे सिर की गलियों में
न जाने कितनी बार
गुजरे हो हर कूचे से हजारों ही बार
तुम जानते हो इनकी रगत
तुम जानते हो इनकी रग-रग
वाकिफ़ हो इनके कट से
वाकिफ़ हो इनके कष्ट से।
मेरे बाल क्या हैं
जैसे कि हों किसी कॉलिज के छोकरे,
आया जो कोई झोंका,
हो गये खड़े,
छा गया हुड़दंग
बिगड़ गया डिसीप्लिन,
कोई खड़ा, कोई पड़ा
कोई टेढ़ा, कोई लेटा।
बाल से बाल अड़ जाता है
बाल से बाल लड़ जाता है
उलझ पड़ता है बाल से बाल
खिंचने लगती है बाल की खाल
होने लगती है गुथम्-गुथ, जुद्धम्-जुद्ध।
यह मजमा
यह हंगामा
मेरी खोपड़ी बन जाती है
हिन्दुस्तान की संसद।

पर कल जो देखा
इनका ढग
मैं रह गया दंग
खोपड़ी की सतह पर
दिखाई पड़ी हिन्दुस्तान की सियासत,
बालों का तो हाल ही बदल गया
जैसे कि सारा नक्शा ही बदल गया हो।
नजर आईं नई पार्टियाँ
लगा लिये हों लेबल नये,
कर लिया जैसे कि फ्लोर क्रोस,
निखर आई नई राजनीति,
टूट गया एक पार्टीसिस्टम
सर पर छा गई, मिली-जुली सरकार
यह साँझा मोर्चा !
पर प्यारे, क्या करते रहे तुम
कभी बताया तो होता
किसने शुरू किया फ्लोर क्रोसिंग ?
किसने खड़ा किया बगावत का झण्डा ?
तुम्हें अपना फर्ज तो निभाना था
खतरे पर सायरन तो बजाना था।

टेलीफोन

हां, सुनिये तो,
सुन रहे हो ?
....

तो ठीक है
गर फैसला है कि
फासला न रहे।
तो फिर क्या ?
ढूंढ लो एक बहाना
हसीन सा
और जरूरत समझो तो
पूछ लो
किसी एक्सपर्ट से, नेता से,
अभिनेता से, विधिवेत्ता से
कि कैसा बहाना
फब जायेगा
फिट हो जायेगा
कथानक में।
आदर्श-वादर्श सांप की केंचुली
फेंक दो लबादा बेवक्त का
आओ, तलाश करें बहाना
मिला-जुला
पारस्परिक सहयोग से संभूत
किसी सुन्दर सपने का
ब्लू प्रिण्ट
....

जल्दी करो
एक छलांग में बदलनी है दुनिया
बननी हैं नई रेखाएँ
सिमटनी हैं सीमाएँ
घटता है फासला,
जरा महको।
तेरी साँसों की महक में
महकने ये तार
ये सितारे
हाँ
....
हैं ?
....
रोंग नम्बर ?
सच ?
रियअली ?
सोरी !
माइ गुडनिस !
स्पेस एज की तो यही मुसीबत
जरा सी गलती
ले जाती है किसी और ही कक्षा में
टकरा देती है किसी नये ग्रह से।

नीलकंठ द्वितीय

मेरा परिचय मत पूछ,
मैं नीलकंठ द्वितीय
मेरे नाम वसीयत है
नीलकंठ प्रथम की,
उत्तराधिकार में मिला
काल कूट
युग युग का
समुद्र मंथन से आज तक का !
वसीयत के साथ
नसीहत भी है कि
पिये जा
हलाहल
युग का
जग का
कन्सनट्रेटिड कॉफी समझ कर
और
मैं
आदेश से
आवेश में
पी गया
एक घूंट में
उड़ेल लिया विष कुम्भ
कण्ठ कमल में ।
विषधरों की फुंकार
मेरी सांसों में

स्वरों मे
मैं अब 'आउट आव वाउण्ड्स'
मेरी परिधि मे पार हो
मेरा कहना मान ।
दूर हट,
क्यों बनती हो तृष्णा ?
मेरी साँसों की गर्मी ने
पिघलते देखा है
हिम भी और हेम भी
तुम्हे कैसे समझाऊँ ?
दक्ष कभी दरियादिल नही हुआ
गनी सस्करण सभव नही
अपर्णा की भूमिका आसा नही
दि जिह्वा दुनियां मे
द्विजन्मा जमना नही
सच मान
क्या रक्खा है ?
निक्तता मे
रिक्तता मे
देर न कर
भाग जा
मधुमास कही और है ।

त्रिशंकु की परम्परा

मैं आज हूँ
कल का बेटा
इतिहास का धनी
त्रिशंकु का वंशधर
अन्तरिक्ष का पहला मानव
जो उड़ गया पंचतत्व के कंपसूल में
पंचशील के सूट में
जब लगा एक धक्का
विश्वामित्र के लाँचिंग पैड में
पहुँच गया अन्तरिक्ष में
धकेलने लगी धरती
दुत्कारने लगी जन्नत
इसी धक्कम पेल में
शीत युद्ध में
दो ताकतों के झगड़े में
चोट में
खोट में
भटक गया अधर में
निरावलम्ब
शून्य में दीर्घायन लिये हुए
घूमता हुआ
पेण्डुलम सा
कभी इधर
कभी उधर
लटक गया

जहाँ से
जन्नत से
यह है मेरा ऐतिहासिक परिवेश
मैं आज हूँ, कल का बेटा
त्रिशंकु का वंशधर !

रेत से रेत में

जी को करता है कि
तेरी बाँहों के घेरे में,
तेरी जुल्फ़ों के झुरमुट में
क़ब्र में,
निकुंज में,
गहन रातों में,
बैठकर
देखता रहूँ
ये बाहें
ये प्यार के भरमे
ये यमुन पट
ये गागर में सागर
ये तेरी साँसों में महकी
सुगन्धित हवायें
ये ठण्डी आहें
इस नख़लिस्तान की
ज़िन्दगी के मरुस्थल में
ज़िन्दगी भर;
और
शायद
ये फटे हुए होंठ
ये मिले हुए होंठ
ये झुलसे हुए होंठ
ये अलसाये हुए होंठ
ये पथरीले होंठ

संध जायें
खुल जायें
खिल जायें
महक जायें
तर जायें
अहिल्या की तरह
तेरे अधरों के
पदन्यास से
पर
रुक नहीं सकता
मैं राहगीर हूँ
इस सहारा का
इस रेगिस्तान का
इस रेत का
जो रखती नहीं निशान
काल का
क्षण का
इतिहास का
पदचिह्नों का
मेरे वादे है इस भू से
मेरे वादे है इस लू से
मेरा हिसाब है
इस भू से
इस लू से
पुराने अहसान
बचपन के
जब लू ने मुझे लोरी दी थी
उस रेत के पहाड़ पर
उस बालू के महल मे,
महल ढह गया
पहाड़ ढह गया
रेत के तूफान मे
रेत का तूफान मुझे पुकार रहा है,
मेरी जेब मे लू का बारूद

और यह
जन्म जन्म की प्यासी लू
सोख न ले
अमृत
तेरे होठों मे
यह दस्तूर है
इस लू का
इस भू का,
मुझे जाने दे
तेरी मेहरबानियों की शुक्रिया
कल सुबह का
इन्तजार कर।

मिनी कङ्काल

रेलवे प्लेट फार्म
ट्रंक पर।
कोई
जिसके चेहरे पर चिह्नित
बीस पतझड़।
जिसकी गोद में पल रहा
डेढ़ साल बूढ़ा
मिनी कंकाल।
चूस रहा हो जैसे कोई
दूसरा कंकाल।
पास में बैठा हुआ
उसका साझेदार,
भागीदार,
भगा रहा मक्खियां
जो पल रही थी।
उस मासूम कंकाल पर।

हेमरिज

अरे, तुम
भगवान से डरते हो ?
लगता है
बुद्धू हो, बेवकूफ हो
भगवान तो
कभी का भाग गया
या बंद हो गया
अपने ही महल में ।
हो सकता है ब्रेन हेमरिज हो गया हो ।
पर फिर भी, अच्छा है कि
राज पर पर्दादारी रहे
इसलिये कि
बगावत न हो जाये
उसके ही अनुयायियों में,
रोना न पड़ जाये
मौडरनिज्म का,
जाग न जाये
कोई नया कबीरा,
कभी ऐसे यह मिथ
और इसीलिए
मिथ्या प्रचार चालू है
बड़े ज़ोर शोर से ।
भगवान
सब कुछ देखता है,
सुनता भी है

देर सवेर समझता भी है।
पर ऐसे को क्या कहिये
हमारा भगवान तो भोला है—
बम भोला
मस्ती में रहता है
मस्ती में नाचता है।
कर लो माँग
दे देगा माँग
और वरदान भी
बन जा हिप्पी, बन जा हिप्पी
पिये जा चरस, चरस में नवरस
लगाये ऊँची भंग, भंग में नवरंग
इस भाँग खाये हुए भगवान की दुनियाँ में
बजते रहो टनाटन, घनाघन
बजाओ घण्टे, हिलाओ टालियाँ
मन्दिरों में,
घण्टाघरों में।
चीखो, खूब चीखो, भोंपू बजाओ
पर क्या भाँग खाया हुआ भगवान
जाग जायेगा?
अगर ज़रा-सी करवट बदल भी ली,
आँखें खोल भी लीं
तो उससे क्या?
यह पुजारी गज़ब का गोला
रखता है स्लीपिंग पिल्स का स्टोक,
गिरा देगा कोई ट्रूनोल या ल्यूमीनोल
और छुट्टी हुई
"ब्रह्मा के एक दिन की।"
लो आज की ताज़ा खबर
मैडिकल बुलेटिन
भगवान का बहरापन कम्पलीट,
लाइलाज,
उसे अब कुछ नहीं सुनता।
मेरा विश्वास करो

भगवान् से क्या डरना ?
बात करो तबियत से
हमारी गुफ्तगू वह न सुन सकेगा ।
तुम बुरा न मानो तो
यह किया खाता क्लोज
भगवान का,
शास्त्र-वास्त्र भिजवा दिये जायें
किसी आर्काइव्ज में,
काम आयेंगे
शोध में
साइको-अनेलिसिस में ।
फुरसत में देखेंगे कि
मनु याज्ञवल्क्य में क्या कुछ कोम्प्लेक्सेज थे ?
उनकी भी कुछ कुण्ठायें होंगी जरूर,
सेक्स से इम्यून तो सभ्यता का दौर न रहा होगा ?
गोपालन की अर्थ व्यवस्था में भी
जब घी दूध की नदियाँ बहती होंगी
तो तत्कालीन पुनस्नात रूपवती
और आज की 'रूपवती' की साइकोलजी में
क्या फर्क रहा होगा ?
चलो, छोड़ें इन सब बातों को ।
हो जायें कुछ काम की बातें
मुझे जवाब दो
सच सच
तुम्हें भगवान की कसम
मुझे लगता है
तुम्हारी आँखों में निमंत्रण है
यह सिन्दूर की रेखा !
कोई लक्ष्मण रेखा तो नहीं,
हटने दो रेखा,
लै करो नई सीमा, नया दायरा
निज नये सिन्दूर से ।
सिन्दूर की पुड़िया
मेरी जेब में ।
घबराने की क्या बात ?

देर अबेर समझता भी है।
पर वैसे तो क्या कहिये
हमारा भगवान तो भोला है—
बम भोला
मस्ती में रहता है
मस्ती में छानता है।
कर लो माँग
दे देगा भाँग
और वरदान भी
बन जा जिप्पी, बन जा हिप्पी
पिये जा चरस, चरस में नवरस
सबसे ऊँची भंग, भंग में नवरंग
इस भाँग खाये हुए भगवान की दुनियाँ में
करते रहो *टनाटन, घनाघन*
बजाओ घण्टे, हिलाओ टालियाँ
मंदिरों में,
घण्टाघरों में।
चीखो, खूब चीखो, भोंपू बजाओ
पर क्या भाँग खाया हुआ भगवान
जाग जायेगा?
अगर जरा-सी करवट बदल भी ली,
आँखें खोल भी ली
तो उससे क्या?
यह पुजारी गजब का गोला
रखता है *स्लीपिंग पिल्स का स्टोक,*
गिरा देगा कोई ट्रूनोल या ल्यूमीनोल
और छुट्टी हुई
"ब्रह्मा के एक दिन की।"
सो आज की ताजा खबर
मेडिकल बुलेटिन
भगवान का बहरापन कम्प्लीट,
[illegible],
उसे अब कुछ नहीं सुनना।
[illegible] विश्राम करो

भगवान् से क्या डरना ?
बात करो तन्हाइयों में
हमारी गुफ्तगू वह न सुन सकेगा।
तुम बुरा न मानो तो
यह किया जाता बलीज़
भगवान का,
शास्त्र-वास्त्र भिजवा दिये जायें
किसी आर्काइव्ज़ में,
काम आयेंगे
शोध में
साइको-अनेलिसिस में।
फुरसत में देखेंगे कि
मनु याज्ञवल्क्य में क्या कुछ कॉम्प्लेक्सेज़ थे ?
उनकी भी कुछ कुण्ठायें होंगी ज़रूर,
सेक्स से इम्यून तो सभ्यता का दौर न रहा होगा ?
गोपालन की अर्थ व्यवस्था में भी
जब घी दूध की नदियाँ बहती होंगी
तो तत्कालीन पुत्रस्नान रूपवती
और आज की 'लूपवती' की साइकोलजी में
क्या फ़र्क रहा होगा ?
चलो, छोड़ें इन सब बातों को।
हो जायें कुछ काम की बातें
मुझे जवाब दो
सच सच
तुम्हें भगवान की कसम
मुझे लगता है
तुम्हारी आँखों में निमन्त्रण है
यह सिन्दूर की रेखा !
कोई लक्ष्मण रेखा तो नहीं,
हटने दो रेखा,
तै करो नई सीमा, नया दायरा
निज नये सिन्दूर से।
सिन्दूर की पुड़िया
मेरी जेब में।
घबराने की क्या बात ?

वी० आई० पी०

यह दिवाली
साल में
एक बार
वी० आई० पी० की तरह;
मगर यह दिवाला
पेइंग गेस्ट की तरह
आ जाता है
हर समय
हर जगह
बैठ जाता है
जम कर
मेरे घर में
इस तरह कि
मिल गया हो
पिन योक्स
फौजी को
मोर्चे पर।
और
मैं,
घिरा हुआ
घुटा हुआ,
किराये से,
उम्मीद से,
उधार से
सरकता हूँ

द्वार
तोरण,
मनाता हूँ
उल्लू को;
जमा करता हूँ
गोबर
अन्धेरे में
अमावस्या के
प्रकाश की खोज में
मगर मेरी हर साँस में
दिवाला
फुफकारता रहता है
काले नाग की तरह।
काली रात में
दीप जलने से पहले
बुझ जाता है
मेरी ही साँस से।
लक्ष्मी उड़नछू,
दिवाली उड़नछू।
फूंक से,
पटाखों से
पत्थर की फुलझड़ियों से
और
पीछे रह जाता है
उल्लू
वी० आई० पी० का,
गोबर,
गड़बड़
भड़भड़
दिवाला
चुकने को
साल भर।

आहुति

रामा, मेरी श्यामा
कामधेनु की नंदिनी,
पयस्विनी,
आखिर चल दी
तपस्विनी-सी
निर्मोही-सी
छोड़ कर
चमड़ी की चद्दर में
ढाँचा
जो ठिठराता रहा
कुछ रोज़
कोरी आस की घास पर
जब चारा न रहा
जब सूख गये
पयकूप
दूध के झरने
हड्डियों की मज्जा
परती
जलकूप,
अब आस न रही
गोपाल से,
गो-भक्तों से
जब छिन गया
विश्वास कि
अब न आयेगा

कोई दिलीप
बचाने नंदिनी को
पंजे से
अकाल के
शेर के
गायब है
गोपाल,
भाग गया
भगवान
मैदान से
किसी 'कौल' की तरह
नेफा से
ढूँढ़ लिया
नया मंदिर
रणछोड़जी का
किसी कोने में
और
दिलीप
लगता है
लग गया है;
व्यापार में
निर्यात के
हड्डियों के, चमड़े के।
जय हो अकाल,
जय हो महाकाल,
जय हो भयंकर!

    यह ले मेरा भाग
    बलि
    आहुति

खुश हो, नाथ,
बजने दे डमरू,
होने दे तांडव
इन सब आबाद

    श्मशानों में
    कंकालों की नगरी में,

लीज़

बाबा, बड़ी मुसीबत हो गई
निन्यानवें वर्ष से अधिक तो
लीज़ होती ही नहीं,
छोटा-सा कानूनी मुक्ता जन्म देता है
पहाड़मान गुत्थी को
जो सुलझती नहीं।
आज तक तो तेरे नाम के सहारे
तेरी गुडविल के सहारे
चलता रहा धन्धा
कभी तेज कभी मंदा।
पर आज
सदी के आखिरी चरण पर
कदम रखते ही,
खतम हुई टर्म मैनेजिंग ऐजन्सी की
तेरे नाम की, मनोपली की
अब तो लगता है,
घटने लगी है साख,
उठने लगी है हाट,
छिन गई हैं चाबियाँ
तेरे बेनाम महल की,
उन मुबहम मकामात की
जहाँ देखे गये थे जलवे
तेरी सदारत के
तेरी क़यादत के।
ज़रा यह तो बता

"यह कि वह"

कहिए, कुछ कहिए तो
आप तो खड़ी हैं,
चुपचाप,
गुमसुम,
छाया सी,
माया सी,
कौन है आप ?
क्यों आना हुआ ?
इस वक्त, बेवक्त,
जरा जोर से कहिये,
मैं सुन रहा हूँ,
समझ रहा हूँ,
तो, आप !
लाई है कुछ यादें
करने आई है कुछ फरियादें
शकुन्तला की तरह
दुष्यन्त के दरबार में
आप जो कहती है,
तो ठीक ही कहती है
तुम शकुन्तला सही,
तुम दमयन्ती सही
मगर खुदा के लिए
जरा-सी बात बदल दो
मैं दुष्यन्त नहीं
दुष्यन्त एक राजा था

क्या यह संभव नहीं कि
तू आ जाये एक बार
या भेज दे कोई नया मसीहा।
मैं भी तंग आ गया हूँ
इन मरे भुनगाओं से,
इन नये धूर्तों से
जो पैदा होते रहे हैं
मेरे आस पास।
मेरी मानो तो
रिलीज़ कर दो नया महात्मा,
बड़ी मांग है
बाज़ार में।
इस बार
बॉक्स ऑफिस हिट होगा !

"यह कि वह"

कहिए, कुछ कहिए तो
आप तो खड़ी हैं,
चुपचाप,
गुमसुम,
छाया सी,
माया सी,
कौन हैं आप ?
क्यों आना हुआ ?
इस वक्त, बेवक्त,
जरा जोर से कहिये,
मैं सुन रहा हूँ,
समझ रहा हूँ,
तो, आप !
लाई है कुछ यादें
करने आई हैं कुछ फरियादें
शकुन्तला की तरह
दुष्यन्त के दरबार में
आप जो कहती हैं,
तो ठीक ही कहती हैं
तुम शकुन्तला सही,
तुम दमयन्ती सही
मगर खुदा के लिए
जरा-सी बात बदल दो
मैं दुष्यन्त नहीं
दुष्यन्त एक राजा था

"यह कि वह"

कहिए, कुछ कहिए तो
आप तो खड़ी हैं,
चुपचाप,
गुमसुम,
छाया सी,
माया सी,
कौन हैं आप ?
क्यों आना हुआ ?
इस वक्त, बेवक्त,
ज़रा ज़ोर से कहिये,
मैं सुन रहा हूँ,
समझ रहा हूँ,
तो, आप !
लाई है कुछ यादें
करने आई है कुछ फरियादें
शकुन्तला की तरह
दुष्यन्त के दरबार में
आप जो कहती है,
तो ठीक ही कहती है
तुम शकुन्तला नहीं,
तुम दमयन्ती नहीं
मगर खुदा के लिए
ज़रा-सी बात बदल दो
मैं दुष्यन्त नहीं
दुष्यन्त एक राजा था

देखते रहते थे जिसे
हिजड़े, कुबड़े, लूले लँगड़े कंचुकी
दूर से
चलो छोड़ दें इतिहास
बदल दें बात का दौर
छा रही है मेरे दिमाग में धुंध
उठ रहे हैं यादों के गुब्बार
लौट कर आ रहे हैं ख्वाब पुराने
मानस पर छा रही है सावन की रंगीनी
हाँ याद आ रहा है
करेण्ट था तुम्हारी कलाई में
शेम्पेन ढुलती थी तुम्हारी होठों से
एक महक थी तुम्हारी साँसों में
एक बहक थी तुम्हारी बातों में
चुम्बक था तुम्हारी आँखों में
चाबुक था तुम्हारी आँखों में
मैं तुम्हें पहचान रहा हूँ
तुम इड़ा हो
पीड़ा हो
क्रीड़ा हो
व्रीड़ा हो
प्रकृति की, पुरुष की
शक्ति की, शिव की
तुम आकृति हो, प्रतिकृति हो
हेलन की, पद्मिनी की
जिनके नाम में जादू ने
ला दिया तूफान
पानी में, पृथ्वी पर
दाव पर लग गये,
ताज भी, राज भी
इसलिए कि
देखने को मिले
वह सूरत, वह सीरत
जिसने लगाई पानी में आग

शौकीन था
शिकारी था
मारता था हिरनों को
पकड़ता था हिरणियों को
उसका रनिवास एक बाड़ा था
एक नवाड़ा था
पकड़ लिया जिस पर नजर टिक गई
फिसल गया जहाँ पर नजर फिसल गई
शकुन्तला, प्रियंवदा रुक्मणि
मोडल थे
सीजन के
साल के
उस जमाने के
मोडल बदलते हैं
बदले जाते हैं
कार के, ब्यूटी के,
कृष्ण के बाड़े में सोलह हज़ार मोडल
होंगे जिनके ग्रेड कई
कटेगरी कई
कोई चालू तो, कोई आउट ऑफ डेट
सड़ती होगी, सत्यभामा
रोती होगी रुक्मणि
और भी होंगे कटपीस के माल
जिनका न मिलना कोई नामोनिशान
केवल गिनती में आते थे काम
इकाइयों में, दहाइयों में, सैंकड़ों में,
हजारों में
लगाये हुए लेवल
एक फैक्टरी का, एक बाड़े का
जिनका नाम था रनिवास
भनभनाती थी जहाँ
महारानियाँ, रानियाँ, पटरानियाँ
दासियाँ, दरोगियाँ, गोलियाँ
सड़ता था जीवन, उफनता था यौवन

देखते रहते थे जिसे
हिजड़े, कुबड़े, लूले लँगड़े कचुकी
दूर से
चलो छोड़ दें इतिहास
बदल दें बात का दौर
छा रही है मेरे दिमाग में धुंध
उठ रहे हैं यादों के गुब्बार
लौट कर आ रहे हैं ख्वाब पुराने
मानस पर छा रही है सावन की रंगीनी
हाँ याद आ रहा है
करण्ट था तुम्हारी कलाई में
सेम्पेन छलती थी तुम्हारी होठों में
एक महक थी तुम्हारी साँसों में
एक बहक थी तुम्हारी बातों में
चुम्बक था तुम्हारी आँखों में
चाबुक था तुम्हारी आँखों में
मैं तुम्हें पहचान रहा हूँ
तुम इड़ा हो
पीड़ा हो
क्रीड़ा हो
व्रीड़ा हो
प्रकृति की, पुरुष की
शक्ति की, शिव की
तुम आकृति हो, प्रतिकृति हो
हेलन की, पद्मिनी की
जिनके नाम से जादू से
ला दिया तूफान
पानी में, पृथ्वी पर
दाव पर लग गये,
ताज भी, राज भी
इसलिए कि
देखने को मिले
वह सूरत, वह सौरभ
जिसने लगाई पानी में आग

तुम वस्तु हो, वस्तुस्थिति हो
व्यक्ति हो, अभिव्यक्ति हो,
भावों की, अनुभवों की,
तुम हास हो, परिहास हो
आस का, विश्वास का
तुम आकार हो, साकार हो।
माया की, छाया की,
तुम रचना हो, वचना हो,
साधना हो, आराधना हो,
तुम रेखा हो, लेखा हो,
प्रकृति की, प्रवृत्ति की,
हाँ, मुझे याद आ रहा है,
मेरे तुमसे कुछ वादे भी थे,
मेरे कुछ इरादे भी थे,
कि भाग चलूँ तुम्हें लेकर,
पृथ्वीराज की तरह
अर्जुन की तरह,
तुम बन जाओ संयुक्ता
तुम बन जाओ चित्रा,
पहुँच जाऊँ, ऐसी जगह,
जहाँ और कोई पहुँच न पाये,
ढूँढते फिरे फरिश्ते,
क़यामत के रोज़
जब मिलने नहीं पाये टोटल,
सर मारता रहे चित्रगुप्त
उस बनिये की तरह
मिली न हो जिसकी रोकड
पर क्या करूँ
मजबूर हूँ
बेबस हूँ
जकड़ा हूँ
कैदी हूँ
हिल नहीं सकता
डुल नहीं सकता

ओवरटाइम की रात

देखती हो, वह सो रहा
मनहूस
भूत की तरह
सी० आई० डी० की तरह
छाया रहता है सिर पर
डांटता है, फटकारता है
कर दिया जीना हराम
जरा, धीरे बोलो
सोया है, अभी तो, अंधेरे में
जगने वाला है
जग गया तो
ढा देगा गजब,
तेरे पर, मेरे पर,
कौन है यह,
जानती नहीं, कौन है ?
सुपर ईगो
मेरी जान का दुश्मन नम्बर एक
अब जाओ, जल्दी करो,
वह करवट बदल रहा है,
फिर आना, इसी तरह
अँधेरे मे, स्याह रातो में
अच्छा तो
टा टा बाइ बाइ
पोस्ट स्क्रिप्ट
टन टन घड़ी ने बजाये
एक, दो, तीन, चार, पाँच, छ , सात,
मली आँखें, मले हाथ,
रेडियो ऑन किया
दाढ़ी भी बनानी है
चाय भी पीनी है
कुल्ले भी करने है
काम भी करना है
पर प्रायरिटी क्या हो
तरतीब क्या हो

रेडियो बोल रहा था
आज के बाजार भाव
तेल के, नमक के, लकड़ी के
सच क्या है झूठ क्या है
यह कि वह
जाग रहा हूँ कि सो रहा हूँ
मेरी दुनिया कौन-सी है
यह कि वह।

हज्जाम

आज़ादी के शुभ अवसर पर,
इस पुनीत त्योहार पर,
इस पुण्य वेला में,
इजाज़त हो तो,
दिखा दूँ तुम्हें शीशा,
मेरी पुश्त दर पुश्त
दिखाती रही शीशा,
होली पर, दिवाली पर।
यह रही आपकी शक्ल
सही रूप में
न कोई मेक-अप,
न कोई निकाब, न हिजाब
हो जाये मुलाहिज़ा
अपनी ही शक्ल का।
हाँ, यह आप ही की शक्ल है !
देखते नहीं,
ये कैन्सर ट्यूमर बढ़ते ही जा रहे हैं
अख्तियार कर लेंगे मौत की शक्ल
नाचोगे खूब
किसी मित्र की बारात में।
ज़रा हँसिये तो
तुम्हारी हँसी में दिखते
कफ़न रेशम्।
यह पेट !
पू[illegible]

डरो मत अपनी शक्ल से,
डरने को और बहुत हैं।
हिन्दुस्तान का बचपन भाग गया
जवानी भाग गई, अकल भाग गई,
शक्ल भाग गई
सबके सब तुम्हारे ही डर से।
जमाये रक्खो अपनी दूकान
यह स्वांग, यह ढोंग
बस चलता रहे यह क्रम
विलायती बीज से,
आर्टिफिशल इनसेमीनेशन से।
वैसे, मैं तुम्हारा राज़दाँ
काबिले एतबार।
भरोसा करो मेरी बात का,
तुम अकेले नहीं हो, तुम्हें मालूम रहे
तुम्हारा परिवार किसी एक लखनऊ तक
सीमित नहीं है,
छा गया है सारे हिन्दुस्तान में।
ये नये
नवाब जादे, साहिब जादे
पांचानियों के बेटे, पंचों के बेटे
मौके के बेटे,
कोई पी० एल० के बेटे,
सी० एम० के बेटे,
चार सौ अस्सी के बेटे,
चार सौ बीस के बेटे,
कोई सनमानिये, कोई अडमानिये,
हिरने-हुमने भ्रूण के बच्चे
ये नये नवाब जादे
वाजिद अली की कब्र का मुँह खुल गया
बादशाह बेगमें दाखिल हो गईं हरम में
एक बार फिर से,
मगर फिर भी,
मुझसे मौत का कारण नहीं

माना कि
मेरे पास उस्तरा ज़रूर है जो
तेज़ है
गरम है
हटाने को नासूर पुराने
वैसे लोग कहते भी हैं
मैं जर्राह हूँ, हकीम हूँ, हज्जाम हूँ
पर मुझ से खौफ बेसबब
जब तक मैं ज़िंदा हूँ
सलामत है आपकी नाक
इस देश में न्यूरेम बर्ग ट्रायल मुमकिन नहीं।
पर यह कभी न भूलिये
मैं आपका खास नाग,
युग युग से चला आ रहा खास नाग।
लाइए मेरा इनाम
बढ़ा हुआ 'डी० ए०'।
आप जानते हैं
महँगाई है।

चार्ज शीट

एक दूरी से
शीशे में शक्ल
बहुत अच्छी लगती है
मुझसे अच्छी मेरी परछाईं
पर ज्योंही
दूरी हटी
मुकाबिला हुआ आमने-सामने,
तो चेहरे के गड्ढे जो पुते पड़े थे अबतक,
प्लास्टिक सर्जरी के कैमाफ्लाज से,
एकदम उघड़ गये
मेरे पुराने राज जिन्हें एक्सकोण्डर समझे बैठा था
छुपे पड़े थे इन खड्डों में,
और सबके सब यकायक मुखबिर बनकर
उधेड़ने लगे पुरानी दास्तानों के तार
जो ढके पड़े थे
किसीके मैक्सफैक्टर के प्लास्टर के नीचे।
जब बेपर्दगी गुज़रने लगी बर्दाश्त के बाहर
तो सोई हुई दास्तानें बगावत कर बैठीं
और एक फौजी 'कू' हो गया।
मेरे आज के ये दुश्मन
कल जो दोस्ती का दम भरते थे
होस्टाइल गवाह बनकर
नंगा करने लगे मेरे कल को
मुझे भरोसा न रहा मुझ पर ही
अपनी शक्ल पराई लगती है।

कृपया शीशा हटाओ,
मुझे शीशा न दिखाओ।
मुझे डर लगने लगा है
अपने ही इतिहास से।
अपने ही भूत से
मैं इतिहास को इन्कार करता हूँ,
मेरा कोई इतिहास नहीं,
मुझे भूगोल में मत बाँधो
मेरे लिये न कोई रेखा है, न सीमा है
किसी कटिबन्ध की, न किसी काल की,
मेरे लिये
न कोई ध्रुव सत्य, न ध्रुव तारा।
हटालो यह कुतुबनुमा
मुझे कोई दिशा भ्रम नहीं
मेरे पर लांछन है तो एक ही कि
मैं एकाकी हूँ,
        अजनबी हूँ
और
मैं
इकबाल करता हूँ
इस जुर्म का।

तोहफ़ा

"सर !"
"यस सर, जी श्रीमन् !"
"सुनिये तो।"
"कहिये तो।"
"एक बात है।"
"दो बात।"
"ज़माना क्या चाहता है ?"
"पूछिये ज़माने से।
"इस तरह नहीं।"
"तो फिर किस तरह ?"
"लोग चाहते हैं 'जी हुज़ूरी', अक्ल की पूछ नहीं।"
"ठीक ही तो है, जी हुज़ूरी सब्स्टीच्यूट है अक्ल का।
पर लोग अक्ल-अनेमिक हैं।"
"हाँ, पर बताइये कोई हल, कोई फोरमुला।"
"अक्ल के इंजक्शन ले लो।"
"मगर रि-एक्ट करते हैं पेनसिलन की तरह।"
"तो बताये देता हूँ एक फोरमुला, एक नुस्खा,
मगर पेटेन्ट मेरा है।
तुम एक काम करो।"
"क्या ?"
"पकड़ लो, पकड़वा लो, खरीद लो
कुछ तोते
और तोतों को रटा दो—
जी हाँ, हाँ जी, यस सर, यस प्लीज़।
और तोता, जो रटता आया

सीताराम, राधेश्याम
रट लेगा
जी हाँ, हाँ जी, यस सर, यस प्लीज
बिना किसी दिक्कत के।
फिर
साहब को,
आका को,
हुजूर को,
हजरत-आला को,
भेंट करो एक गिफ्ट
इस तोते की
बर्थ डे पर
सजा कर एक पिंजड़े में
और कार्ड में
जहाँ लिखा हो
'मैनी हैप्पी रिटर्न्स'
लिख दो
यह तोता
तोहफा भी है और नुमाइन्दा भी
मेरा।
मैंने सीखा है
एक नाम
एक जुमला
एक वेद वाक्य
जिन्दगी में
'जी हाँ', 'हाँ जी'
जो उपयुक्त है
हर समय हर समाज में
वह सिखा दिया है
इस तोते को।
आपको आखिर की जरूरत नहीं
मुझे अक्ल से वास्ता क्या ?
इस तोते को अक्ल से वास्ता क्या ?
आपको चाहिए

एक आवाज़, एक ही आवाज़
जो ताइद करे
आपकी हर हरकत को
'राइट या रांग',
पर्दा डाले
आपके उल्लूपन पर,
　　बेअक्ली पर,
　　बेवकूफी पर,
दिमागी दिवालियापन पर,
और आपके हर सवाल पर
तैयार रखे
एक 'स्टोक आन्सर'
एक ही जवाब,
जी हां, हां जी,
क्या फर्क पड़ता है ?
आवाज़ आदमी की हो !
या
पक्षी की।

पंख परित्याग

……Salvation lay not in loyalty to form
uniforms but in throwing them away,
(Doctor Zhivago—Boris Pasternak)

अरे, क्या पूछते हो,
रख लिया है जब से
बुद्धिराज का टोपा
अपने सर पर
और
यह वर्दी भी टाइट फिटिंग की
मैं तो बन गया हूँ
टेडी बॉय
इस कदर कि
चाहत चलती नहीं
वश की कोई बात नहीं,
न झुकना, न रुकना
फिर, ऊपर से
पेट पर पट्टी कसी हुई
पीठ पर पीठू
और पीठू में भरी पड़ी हैं
ज्ञान की गोलियाँ,
उपदेशामृत की शीशियाँ
बाबा आदम के ज़माने की
सदियों पुरानी सड़ांद की बदबू से
मर गई है मेरी सूँघने की शक्ति
और सीने पर लगी

यह नुमाइश
मेरी उपलब्धियों के ये मैडल
ये कसर
ये फीते
और ये गजरें
मेरे बहादुराना आमाल की,
कमाल की।
वर्णमाला के प्राय अक्षर
टेढ़े हो गए हैं
मेरी कमाई पर।
बढ़ गई है लम्बाई मेरे नाम की
मगर
इस मलाविग के मलबे के नीचे
दब गई है
रॉक ऑव एजिज
जिस पर बैठता था
मैं
अपने पूरे 'मैं' पन के साथ।
न कोई बोझ था,
न कोई सर दर्द।
नाक सलामत थी।
पूर्ण स्वतन्त्रता थी
सूंघने की,
सोने की,
रोने की,
जीने की,
मरने की।
पर ऐसा तो न था कि
कसमसाहट के साथ
किसी के जूतों में खड़ा रहूँ।
जूते चुभते हों तो
चुभते रहें?
चुभन को चुपचाप
सहता रहूँ

मगर जीभ से ताला न हटे।
प्यास लगे तो लगती रहे
और इस आई-ड्रोपर से
राशन के पानी की दो बूँदों से
लबों को तरसाता रहूँ।
भूख जागे तो
इन ज्ञान की टिकियों से
बरगलाता रहूँ
यह ज्ञान ही ज्ञान,
गन्धहीन, रूपहीन
ज्ञान की चक्की, ज्ञान का चूल्हा
ज्ञान ही खाना, ज्ञान ही पीना
मैं 'मीडाज' तो नहीं
मैं 'टैन्टलस' तो नहीं
ये ज्ञान के इंजेक्शन
बंटते रहते हैं खूब
पुलपिटों से
पीठिकाओं से
मचों से
मुफ्त में
और आज
मेरे खून की तासीर ही बदल गई
मस्तिष्क में विकृतियाँ उभर आईं
इस हद तक कि
सूझ साथ छोड़ गई
और यह सफर
सम्भव नहीं लगता
इस रेतीली राह में
सामने की रोशनी बहुत दूर है
नजदीकी का भ्रम है
मेरे पैर बागी हो गये हैं।
सिकन्दर की फौज की तरह
आगे बढ़ने से इन्कार करते हैं।
अगर मेरी मदद करो तो

मैं चाहता हूँ
मिट जाऊँ।
मगर कोई जिंदा है,
ढोता हुआ है,
जुते गोन है,
मेरी हत्या है।
यह देखो गौरैया
कर रही है रेत-स्नान
इस रेत-गंगा में
मैं भी पा लूँ मेरा
खोया हुआ 'मैं' पन
इस रेत में
उस टिमटिमाती रोशनी की चकाचौंध में।
अन्धेरा रहता है,
मुझे उस रोशनी में क्या लेना है
जो अन्धा बना देती है
उस भीड़ में कौन मिलेगा
सिवाय बहरापन के ?
मेरे पर अहसान होगा
मुझे नंगा कर दो
मेरे जीवन काल में
समझ लो मैं जिंदा बुत हूँ
स्टेच्यू हूँ
मेरा अनावरण आज ही कर दो
मरने के बाद तो नंगे किये जाते हैं
समारोहों में
फिर कल का काम
आज ही हो जाये
क्या दिक्कत है ?
खुली हवा को टकराने दो
मेरे कानों के पर्दों से
संगीत पैदा होगा।
यह टोपा
बहुत ढोता रहा हूँ

यह ढक्कन हटा दो
मेरा बाल बाल
खुली हवा में साँस लेना चाहता है
मेरा रोम-रोम चाहता है
एक ऐसी बेपर्दगी कि
कोई आवरण न रहे
कोई पर्दा न रहे
लोहे का
बाँस का
वस्त्र का
और न मजूर है न बर्दाश्त है
लंगर का बना खाना
तुम्हारे प्रोटीन के बिस्किट
खिलाओ किसी और को
मुझे जरूरत नही।
मैं तो तग आ गया हूँ
इस कदर कि
फेंकना चाहता हूँ
ये पुराने पंख।
नये पंख आयें या न आयें,
मुझे नगा ही रहने दो।
उस रेत के टीले पर
मिट जायेगी थकावट
रेत-स्नान से।
रेत के दरिया में
धुल जायेगी मिलावट
मेरे खून से।
कहते हैं
इस रेत की तासीर ही ऐसी है।
हाँ, तुम्हारे लिये क्या कह सकता हूँ ?
तुम्हारी मर्जी।
गर रोशनी में बुलावा नजर आता है,
गर भीड़ में
कोई स्वर सुनाई देता है,

जो तुम्हारे ही लिये है।
इस बार टी॰ वी॰ में उठे हुए हाथों में
कोई इशारा नजर आता है
जो तुम्हारे ही लिए है।
ये आकाशवाणी कि
'तेरा इन्तजार है'
सचमुच में नहीं है,
तो जाओ
और ले जाओ मेरी तरफ से
सब कुछ
जो मिलता है मुझे
विरासत में
इतिहास से
और समस्त उपलब्धियों के दस्तावेज
मुझे आवश्यकता नहीं
आज के बाद
इस टीले पर
धूल खाऊँगा और जिंदा रहूँगा

बपतिस्मा

हाँ, तो
आपका नाम है
अब्दुल्ला
यानी
अल्लाह का आबिद
खादिम
गुलाम
वाह रे खाकसार!
तुम्हारे अब्बा का नाम?
अलादीन
अम्मी जान?
इनायत
और बिरादरी में
गुलाम हसन
आबिद हसन
गुलाम कादिर
गुलाम नादिर
पूरा का पूरा कुनबा
कोई गुलाम
कोई आबिद
कोई खादिम
एक लम्बी कतार
उन नामों की
जो याद दिलाती है
'मूक अल आबिद' की

बसरा के बाजारों की
जहाँ बिकते थे गुलाम
मवेशियों की तरह,
ईसप की नीलामी होती थी
खरीदने का मापदण्ड ?
यह था कि
पुट्ठे कैसे हैं ?
कितनी मछलियाँ पल सकती हैं
इन गुलामों की बोटियों से
और
इन मछलियों से पलते थे
शहनशाह
चलती थी सल्तनतें
सुलतानों की,
वजारतें
वजीरों की,
तिजारतें
ताजिरों की,
ईसप के भाई बन्धु
ढोते रहे पहाड़ के पहाड़
पिरेमिड
मिश्र के अल अहराम
रोम की सभ्यता व साम्राज्य के
सब की सब
शोणित स्नात
खैर, चलो, अब्दुल्ला जी
यह कौन है ?
हो जाये मालूम इनका भी,
ये भगवान दास जी,
मालूम है
ये भगवान के दास
मेहनत
फिक्र
बरकरार

पिता का नाम ?
भगवान दीन,
माता ?
दया,
और बन्धु वर्ग मे
रामदास
हनुमान दास
शिव सहाय
चरणदास
बही भाट की किताब देख लो,
पीढ़ी दर पीढ़ी
केवल दास ही दास
सेवक ही सेवक
दासानुदास
चरणरज
खाते रहे धूल
पीते रहे खून
ये दास
बिकते रहे बोली मे
चढ़ते रहे पासे में
भेंट मे
दहेज मे
नाचते रहे देवदासियो के साथ
स्वतन्त्र अस्तित्व
या
सह अस्तित्व की
बात मत करो,
रगड़ते रहे किस्मत
पत्थरो मे
पत्थरो के सनम के सामने
साष्टांग दण्डवत करते करते,
सिजदा करते करते,
रगड़ से घिस गई
पत्थर की लकीरें

औरतों की

पर बदली नहीं
किस्मत की लकीरें
न जाने कौन-सी स्याही से
लिखा था कातिबे वक्त ने
चित्रगुप्त ने;
एक गुलाम, एक दास
वह किसी इनायत का बेटा
वह किसी दया का बेटा
फ़र्क कहाँ है ?
जरूर कोई साजिश रही होगी
आखिर कब तक
पहने रहोगे
यह नकली खाल ?
कब तक गाते रहोगे ?
ये गीत
किसी के फज़लो करम के,
आशीर्वादों के,
अपनी हस्ती मिटा कर
दास भाव से
दस्यु बने
पीढ़ी दर पीढ़ी
जीते रहोगे कब तक ?
किसी की रहमत पर
इनायत पर
दया पर
बख्शीश पर
प्रसाद पर
तुम ने रहो बने हुए,
अल्लाहबख्श, खुदाबख्श,
रामबख्श, गुरुदास
राम प्रसाद, हनुमान प्रसाद
जैसे कि अपने में कुछ है ही नहीं
मैं कहता हूँ,
हद हो चुका

कह दो
मैं
अब मैं हूँ;
किसी का दास नहीं
मैं मन्सूर
मैं अनहल हक
मैं भगवान
मैं अब न आबिद हूँ
न दास
गर कुफ्र है तो कबूल है
मैं काफिर सही
फिक्र नहीं फतवे की
यह फेंका लेबल
यह फेंकी खाल
और आज से
मैं मुक्त इन्सान हूँ

गली में गलियारा

मेरा टीपू
अलसेशन वंश उजागर
कुलीनता में कोई कसर नही,
किधर से ही देख लो
मातृ पक्ष
पितृ पक्ष
नाना नानी
दादा दादी
लक्कड़ दादे तक
रक्त का कतरा-कतरा
शुद्ध रक्त का सर्टिफिकेट दे सकता है।
इसकी मा
गजब की कुतिया
सबके मन भायी हुई
हर शो की हीरोइन
लगातार कई साल तक;
बाप
नाम का टाइगर
नवाब साहब का खास पिट्ठू
पुलिस का कुत्ता
डॉग स्क्वैड का लीडर
जिसे अपनी नाक पर भरोसा
जिसे अपनी पूंछ पर नाज;
मुझे टीपू पर नाज
टीपू को मुझ पर नाज

टीपू मेरे कहने से
ले आये
गेंद,
गोला
लुढ़का दे
लुढ़क जाये
लपक पड़े
झपक पड़े
भौंकने लगे,
चुप हो जाये
दुम हिलाने लगे,
पैर चाटने लगे
मेरे
व
उन तमाम लोगों के
जिनके पैर मैं चाटता हूँ,
लोटने लगे
खड़ा हो जाये
रीछ बन जाये;
मेरे जरा से इशारे से
बन जाये
खूंख्वार भेड़िया,
निकालने लगे बण्ट
दिखाने लगे दान्त ।
कहने का मतलब
सौ बात की एक बात
टीपू मेरा है
सौ में सौ पैसा
और
मैं टीपू का
जिसका शहादत
मेरा एलबम
पर एक रोज़
क्या बात थी ?

कोई शनि की गाड़ गली थी
या कोई ग्रह वक्री हो गया था
मैं टीपू के साथ
बड़े सवेरे
जा रहा था घूमने कि
सामने मिल गया
भूरिया
भूरे रंग का कुत्ता
नामकरण भी किसी पंडित ने
नहीं किया था
सड़क छाप नाम
जिसके शरीर पर
अस्सी घावों से ज्यादा के
निशान
गली का राजा
गुण्डा
कुछ भी समझ लो
झपट पड़ा टीपू पर
धर दबाया टीपू को
फिर आ गया
काळिया
धोळिया
बीसिया
मोतिया
सब के सब
भूरिये के रिश्ते में
कोई बेटा
कोई पोता
कोई नाती
वैसे,
ऐसे लोगों की वंशावलियाँ नहीं होतीं,
न किसी प्रकार का रेकार्ड
न कोई बही भाट
टीपू के मुकाबिले में

उग शो पीम कुतिया के पुत्र के
मुकाबिले मे,
टाइगर का बेटा टीपू
पिट गया
मिट गया
भूरिये का झटका
बिजली का करण्ट निकला
मैं टीपू को बचा न सका
अब मैं,
एकाकी
असुरक्षित
क्या करूँ ?
भूरिये से दोस्ती करूँ ?
पर क्या भूरिया इस लायक है ?
उसकी जाति
उसका रुतबा
उसका स्टेटस कुछ भी तो नही है
टीपू मरहूम के मुकाबिले में
(भगवान उसकी आत्मा को सद्‌गति दे)
पर टीपू की मौत के साथ
मर गई संभावना भी।
अब इस गली मे
कोई टीपू नही आयेगा
न कोई उसका वंशज
यह गली अब भूरिये की
और उसके बेटो की
बड़े-बड़े साण्ड चकराते हैं भूरिये मे
हर भिखारी का समझौता है
भूरिये से
भूरिये से कौन नही चकराता ?
सब डरते हैं,
गाय, गोधे, साण्ड, भाण्ड, बाबू, बनिये,
फिर, मैं ही क्यों न हो लूँ
भूरिये के साथ ?

टीपू गया
गया ऽऽऽ
अब लौट कर न आयेगा
मुझे आखिर,
इस गली में रहना है
गली में गलियारा तो संभव नहीं।

दिवास्वप्न की सच्चाई

दर असल
सच बात तो यह है कि
दशरथ
दशरथ न रहा
वह तो ययाति है
जीवन मे फर्क आ गया
सारे दस्तूर ही बदल गये
उसकी बला से,
राम जाये
लक्ष्मण जाये
भरत जाये
शत्रुघ्न जाये
कही भी जाये
सरयू की सीमा नही,
खुले पडे हैं
सारे रास्ते
वन के, उपवन के,
कुछ भी करे
नाक काटे,
कटवाये
लड़े,
भिड़े
बस शर्त एक
हिले नही सिंहासन
(सिंहासन मे साझा नही)

होता रहे अभिषेक
हर साल
नवीनीकरण के साथ
मनते रहे जश्न;
दशरथ का नया दस्तूर
आगे राम की मर्जी
रूठे तो
रूठा करे
भागना चाहे, भाग सकता है
जाना चाहे, जा सकता है
मगर दशरथ के जीते जी
राम का राज्य
एक सपना है
सिंहासन से बड़ा राम नहीं।

दुविधा : द्विविधा

मूसा के वादे पर
चल पडा
पैदल ही
भीड के साथ
रेतीली राह मे
फूं फां करते हुए तूफान मे
मिटते हुए पदचिह्नो के सहारे
धूल फांकना हुआ
खाली पेट
थके पांव
केवल एक उम्मीद मे
मैंना[1] की
मंजिल की
इजरायल की।
मूसा की आवाज पर
कदम बढ़ने गये
फासला बढ़ता गया
पर, न जाने क्या हुआ ?
आवाज फटने लगी
आवाज बिखरने लगी
फटे हुए बांस की आवाज
बैठ गई
बक बोलने लगे
और ये नये मूसे
कालनेमि के बच्चे

---

1. manna

चारों तरफ गूंजती हैं आवाज़ें
मैं मूसा
मैं मसीहा
यह रही
रिद्धि
सिद्धि
दवा
दुआ
बढ़े आओ
चले आओ
आवाज़ का वोल्यूम बढ़ता है
बायें चलो
दायें चलो
आगे चलो
पीछे मुड़ो
देखो, यह रहा गड्ढा
देखो, वह रहा गड्ढा
दो खाइयों के बीच
भीड़ खड़ी है
विस्मित सी
बिस्मिल सी
खिन्न सी
मंज़िल से दूर !
इज़रायल से दूर !
मूसा के इन्तज़ार मे !
मैना के इन्तज़ार मे

चूहेदानी में तूफ़ान

यह घर जिसमें मैं रहता हूँ
बहुत पुराना है
बहुत ही पुराना है
इन खोखली दीवारों को मत देखो,
छत उड़ गयी है
नींव बह गयी है

ये खड्डे
ये गड्ढे
मुझे मालूम है,
इस मकान में तरह-तरह के
जीव,
जन्तु
रहकर गये हैं,
भेड़िये,
रीछ, वनमानुष,
चील, कौवे,
गिद्ध, गीदड़,
कुछ दिन पहले यहाँ चूहे रहते थे,
बड़े-बड़े चूहे,
तरह-तरह के चूहे,
दूर-दूर के चूहे,
देशी, परदेशी,
पंजाबी, मद्रासी,
गुजराती, बंगाली,

बड़ी-बड़ी मूंछ वाले
बड़ी-बड़ी पूंछ वाले
गड्ढे खोदते रहे,
गड्ढे खोदते रहे,
नींव झकझोरते रहे
मकान का पेंदा तोड़ दिया।
चूहों का नाच
मूंछों का प्रदर्शन
मूंछों का मटकाना
चूहों की दौड़,
चूहों की घुड़दौड़,
पारस्परिक होड़ कि
कौन कितनी मिट्टी खोदता है ?
ये ढेरियाँ
अलग-अलग चूहों की,
अलग-अलग कोनों में,
कोई कोना अछूता न रहा,
अब न कोई केन्द्र है
न कोई कोना।
ये प्लेग के व्यापारी !
बेचते रहे पिस्सू
चूहों का गणतन्त्र,
गड़बड़ घोटाला,
गड़बड़ झाला,
इस घर में अब कुछ नहीं
सिवाय प्लेग और महामारी के,
और बड़े मज़े की बात तो
यह कि
कर दी है गन्दगी
इस कदर कि
यह गन्दगी का ढेर
घुल गया है
इस मकान की मिट्टी में
इस हद तक कि

ज़मीन का मौसम इम्तिहान ही
बदल गया है,
मिट्टी की तासीर बदल गई है।
गुलाब का फूल लग नहीं सकता।
लाल गुलाब
जड़ पकड़ सके
ऐसी ज़मीन नहीं रही।
चूहों की कबड्डी चलती रही,
चूहे पलते रहे,
चूहे फलते रहे,
चूहे फूलते रहे कि
उनमें कुछ झाऊ चूहे हो गये
जहाँ बैठ गये सो बैठ गये
अक्सर कि
साँप तक कतराये।
एक रोज़ चूहे लड़ने लगे
ची ची ची ची
चूं चूं चूं चूं
टी टी टी टी
टूं टूं टूं टूं
कोई कहे ची ची चूं चूं
कोई कहे टी टी टूं टूं,
यह चूहों की ज़ुबान !
कौनसी ध्वनि में छुपा हुआ है
शंखनाद,
बिगुल,
भैरवी,
केवल चूहे ही समझे कि
क्या सार्थक है ?
चूहों में दरार पड़ गई
कुछ छोटे चूहों ने
दरार चौड़ी कर दी;
चूहों में फूट पड़ गई,
कोई रंगभेद नहीं;

दो गिरोह चूहों के
कोई आधार नहीं
किसी तरह का
रंग का,
क्षेत्र का
उम्र का।
सभी चूहों का कर्म एक
धर्म एक
कि कुतरने दो,
प्लेग फैलाने दो।
खैर, लड़ाई चलती रही,
अपनी-अपनी ढेरी पर बैठे हुए चूहे
लड़ाते रहे
कभी पूंछ,
तो, कभी मूंछ।
पर जब उड़ने लगी खिल्ली
तो ले आए बिल्ली;
एक वर्ग की ओर से
बिल्ली की वकालत
तो
दूसरी तरफ खोज है कि मिल जाये
कोई कुत्ता,
कोई भेड़िया
जो बिल्ली को भगा दे।
मगर दिक्कत तो यह है कि
भौंकने से बिल्ली डरती नहीं,
खड़के से बिल्ली डरती नहीं,
हल्ले से बिल्ली डरती नहीं,
यह मिन्नी है कि मिन्नी शेर,
कुछ चूहे हैरान हैं,
कुछ चूहे परेशान हैं,
सोचते हैं कि
फंस गये हैं।
बिल्ली से दूर भी मौन,

जरूरी तो नहीं

जरूरी तो नहीं कि
मेरी बात
तुम्हारी समझ से
शादी करे।
मेरी बात की
बात न पूछ
अक्षरों मे मेरी बात ढलती नही
अक्षर निरक्षर के लिए होते हैं
यह बात शायद तुम्हे मालूम नही।
मेरी बात का पारा
बह जाता है
पंक्तियों के बीच
पंक्तियों के बीच पढ सको
यह तुम्हारी आदत नही।
यह अकल अनेमिक शकल !
वहन न कर सकेगी
मेरी बात का बोझ !
तुम्हारे भावों का व्यापार
चलना होगा खूब
काफी हाउस की दुनिया मे
मगर इसके अलावा भी
एक दुनियां होती है
शायद यह तुम्हे मालूम नही।

बिल्ली के करीब भी मौत,
चूहों का वंश खतरे में है,
पर यह तो चूहों की करनी,
जैसी करनी, वैसी भरनी,
करना सो भोगना,
नई बात नहीं।
मुझे तो कोई खतरा नहीं,
चूहे मरें मेरी बला से,
गणेश चाहें तो बचालें
अपने चूहों को।
ये
गणेश के वाहन,
गणेश के वाहक,
बिल्ली के लिए तो
          चूहा वस्तु है
          खाने की,
          खेलने की,
वह तो खेलेगी, खायेगी
नई बात क्या है ?

जरूरी तो नहीं

जरूरी तो नही कि
मेरी बात
तुम्हारी समझ मे
शादी करे।
मेरी बात की
बात न पूछ
अक्षरो मे मेरी बात ढलती नही
अक्षर निरक्षर के लिए होते हैं
यह बात शायद तुम्हें मालूम नही।
मेरी बात का पारा
बढ़ जाता है
पंक्तियों के बीच
पंक्तियो के बीच पढ़ सको
यह तुम्हारी आदत नही।
यह अकल अनेमिक शकल
वहन न कर सकेगी
मेरी बात का बोझ !
तुम्हारे भावो का व्यापार
चलता होगा खूब
काफी हाउस की दुनिया मे
मगर इसके अलावा भी
एक दुनिया होती है
शायद यह तुम्हें मालूम नही।

बौना होता है
छाया हुआ
भूत की तरह,
एक छाया पुरुष,
एक अदीठ फोड़ा सा,
मेरा प्रेत
मेरा प्रसून
(पर पुत्र नहीं)
मेरा पीछा नहीं छोड़ता,
रुक जाऊँ तो
कदम ताल सुनाई पड़ती है,
और तो और,
भीड़ में
भड़क्के में
अकेले में
अकेला नहीं छोड़ता,
हण्टर मारता रहता है,
पर, खूबी तो देख
न हण्टर दिखाता है
न हण्टर के घाव
केवल घावों की चीख
सुनाई पड़ती है;
बस, घबराकर
आज निकल गया
अन्धेरे में,
भागता हुआ
चकमा देता हुआ
इन घुमावदार
तंग
अन्धकूप सी गलियों में
और वह बौना
मुझे लगता है
पीछे रह गया है
(वर्ना आहट क्यों नहीं)

पर, फिर भी,
मेरे भूत का भूत
भौंडा
चला आ रहा है
तीर की तरह
अन्धेरे को चीरता हुआ
आखिर यह जयन्त की जिंदगी
क्यों थोपी जा रही है
मुझ पर।
(मैंने किस सीता के चोंच मारी है ?)